T.T.D. Religious Publications Series No. 1114
Price :

Published by **Sri M.G. Gopal,** I.A.S., Executive Officer,
T.T.Devasthanams, Tirupati and Printed at T.T.D. Press, Tirupati.

श्रीनिवास बालभारती

विदुर

हिन्दी अनुवाद

प्रो. एस. शेषारत्नम्



तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्

तिरुपति

श्रीनिवास बालभारती - 166

विदुर

तेलुगु मूल

जानमद्दि हनुमच्छास्त्री

हिन्दी अनुवाद

प्रो. एस. शेषारत्नम्

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्

तिरुपति

2014

Srinivasa Bala Bharati - 166
(Children Series)

VIDHUR

Telugu Version
Janamaddi Hanumat Sastri

Hindi Translation
Prof. S. Sesharathnam

Editor-in-Chief
Prof. Ravva Sri Hari

T.T.D. Religious Publications Series No. 1114

First Edition - 2014

Copies : 5000
Price :

Published by
M.G. Gopal, I.A.S.,
Executive Officer,
Tirumala Tirupati Devasthanams,
Tirupati.

D.T.P:
Office of the Editor-in-Chief
T.T.D, Tirupati.

Printed at :
Tirumala Tirupati Devasthanams Press,
Tirupati.

दो शब्द

बच्चों का ह्रदय सुमनों की भांति निर्मल होता है। उत्तम कपूर से बढ़ कर सुवासित उनके दिलों में बढिया संस्कार पैदा करना है। यदि उनमें हम अच्छे संस्कार डालते हैं तो चिर काल तक आदर्श जीवन बिताने के लिए सुस्थिर नींव पड जाती है। बचपन में संस्कार प्राप्त बच्चे भावी पीढियों के लिए समुचित मार्ग दर्शन कर सकते हैं। इसलिए हमारे इन होनहार बच्चों के लिए हमारी विरासत बने पौराणिक मूल्यों तथा इतिहास में निहित मानवता के मूल्यों का परिचय कराना अत्यंत आवश्यक है।

बिना लक्ष्य का जीवन निष्फल होता है। बच्चों को लक्ष्य की ओर प्रेरित कर उनके जीवन को सही मार्ग पर ले जाने की जिम्मेदारी बडों के ऊपर है। महान व्यक्तियों की आदर्शमय जीवनियों का परिचय करा कर उनमें प्रेरणा जगाने के उद्देश्य से 'श्रीनिवास बालभारती' का शुभारंभ किया गया है।

इस योजना का मुख्य लक्ष्य नैतिक मूल्यों के माधुर्य के बच्चों तथा सर्वत्र फैलाने का है। हमें यह जानकर अत्यंत आनंद हो रहा है कि बच्चे तथा परिवार के सभी लोग इन पुस्तकों का स्वागत कर रहे हैं। इससे तिरुमल तिरुपति देवस्थानम् का मुख्य उद्देश्य कुछ हद तक सफल हो रहा है।

'श्रीनिवास बालभारती' की योजना तैयार करके उत्तम पुस्तकों का प्रकाशन करवा कर कम कीमत पर सबको उपलब्ध कराने का प्रयास, करनेवाले प्रो.एस.बी. रघुनाथाचार्य आभिनंदनीय हैं।

इस प्रकाशन में सहयोग देनेवाले लेखकों तथा कलाकारों के प्रति मैं अपना धन्यवाद अर्पित करता हूँ।

कार्यकारी अधिकारी
तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्, तिरुपति

प्राक्कथन

आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। अगर वे बचपन में ही महोन्नत सज्जनों की जीवनियों के बारे में जानकारी लें, तो अपने भावी जीवन को उदात्त धरातल पर उज्ज्वल रूप से जीने के मौके को प्राप्त कर सकते हैं। उन महोन्नत सज्जनों के जीवन में घटित अनुभवों से हमारी भारतीय संस्कृति, जीवन में आचरणीय मूल धार्मिक सिद्धान्तों तथा नैतिक मूल्यों आदि को वे निश्चय ही सीख सकते हैं। आज की पाठशालाओं में इन विषयों को सिखाने की संभावना नहीं है।

उपरोक्त विषयों को ध्यान में रखकर तिरुमल तिरुपति देवस्थान के प्रचुरण विभाग ने डॉ. एस.बी. रघुनाथाचार्य के संपादन में स्थापित ''बाल भारती सीरीस'' के अन्तर्गत विविध लेखकों के द्वारा तेलुगु में रचित ऋषि-मुनियों व महोन्नत सज्जनों की जीवनियों से संबंधित लगभग १०० पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया । इनका पाठकों ने समादर किया और इसी प्रोत्साहन से प्रेरित होकर अन्य भाषाओं में भी इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का निर्णय लिया गया । प्रारम्भिक तौर पर इनको अंग्रेजी व हिन्दी भाषाओं में प्रकाशित किया जा रहा है। इनके द्वारा बच्चे व जिज्ञासु पाठकों को अवश्य ही लाभ पहुँचेगा ।

इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का उद्देश यही है कि बच्चे पढें और बडे लोग इनका अध्ययन कर, कहानियों के रूप में इनका वर्णन करें, तद्वारा बच्चों में सृजनात्मक शक्ति को बढा दें। फलस्वरूप बच्चों को अच्छे मार्ग पर चलने की प्रेरणा निश्चय ही बचपन में ही मिलेगी।

आर. श्रीहरि
एडिटर-इन-चीफ
ति.ति.देवस्थानम्

स्वागत

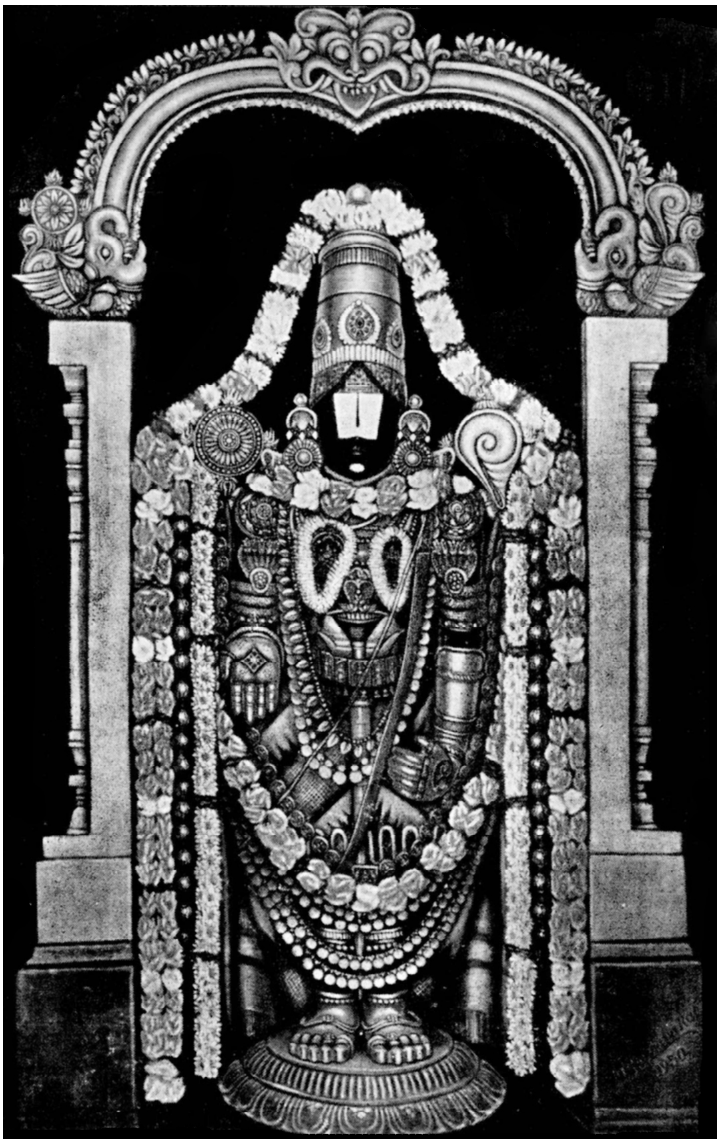
श्रीनिवासदयोद्भूता बालानां स्फूर्तिदायिनी।
भारती जयताल्लोके भारतीयगुणोज्ज्वला।।

जब खण्डान्तरों में सभ्यता की बू तक नहीं थी तब भरतवर्ष अपनी सभ्यता, संस्कार,धर्म, नैतिकाचरण के लिए प्रसिद्ध हो गया था। जो इस पुण्य-भूमि पर जन्मता है वह धर्माचरण में स्थिर होकर अधर्म का सामना करता है और क्रमशः ईश्वराभिमुखी होकर यशोवान होता है। ऐसे महात्माओं के प्रभाव से हमारे जीवन इह-पर दोनों प्रकार लाभान्वित होते हैं। उनके आदर्शमय जीवनों से स्फूर्ति पाता है और समझता है कि मैं इस महान भारत का वारिस हूँ; परंपरागत इस संप्रदाय की रक्ष करना मेरा कर्तव्य है। ऐसी भावना से वह अपने देश की सेवा के लिए तैयार रहता है।

वास्तव में इस देश में कई धर्मात्मा, वीरपुरुष, वीरनारियाँ पैदा हुईं उन्होने संस्कृति की दृढ नीवं डाली है। हमारा भाग्य यही है कि हमारी पैतृक-संपदा के रूप में उज्वल इतिहास की परंपरा है। उनके आदर्शों के पालन करने से ही कोई विद्यावान-विज्ञानी बन सकता है। राष्ट्र के जीवन प्रवाह में वही विज्ञान अचल रहकर जीवन को सुशोभित करता रहता है। इसी सिलासले को आगे बढाने के लिए महात्माओं के जीवनों को संक्षिप्त रूप में आपके सामने रखता हूँ।

हे भारत के भाग्यदाता बालक-आइए-स्फूर्ति पाइए

एस.बी. रघुनाथाचार्य
प्रधान संपादक



विदुर

वह मयसभा था। विश्वकर्मा के द्वारा निर्मित उस रमणीय मंदिर ने राजाओं की प्रशंसा को प्राप्त किया। लेकिन रराज के हृदय में आग सुलगायी। दुर्योधन की दृष्टि में वह मयसभा नहीं माया की सभा है। ईर्ष्या से प्रज्वलित सुयोधन उस सुंदर मंदिर का वैभव को सहन नहीं कर पाया। हस्तिनापुर पहुँचते ही पिता से पांडवों के वैभव के बारे में कहा और साथ ही कहा कि सभा-मंदिर में उसका घोर अपमान हुआ था। इतने में शकुनि वहाँ पहुँचकर कहा कि हे महाराजन्! यदि आप अनुमति दे सकें तो, मैं पांडवों की सारी संपत्ति को दुर्योधन को दिला सकता हूँ। उन्हें जुये खेलने के बहाने से हस्तिनापुर बुलाइये। बाकी काम मैं पूरा करूँगा।

दुर्योधन ने कहा कि ''हे पिताश्री! यदि आप न कहें तो, मैं आत्महत्या करूँगा।'' वैसा मत करो बेटा। मयसभा से भी सुंदर एवं मनोहर भवन का निर्माण कराऊँगा। भवन का उद्घाटन कार्यक्रम में पांडवों के साथ जुये खेलने का इंतजाम करूँगा। धृतराष्ट्र ने कहा।

शकुनि और दुर्योधन चले जाने के बाद विदुर को बुलाकर धृतराष्ट्र ने दुर्योधन की इच्छा को स्पष्ट किया। ''हे महाराजन्! 'जुआ' एक पाप कर्म है। वह भाइयों के बीच दुश्मनी को सुलगाती है। अनेक संकटों को जन्म देती है। नीति-नियम को तोडनेवाले ही 'जुआ' खेलते है। राज परिवार के लिए यह कदापि उचित नहीं है।'' विदुर ने कहा यों निर्भीक होकर सच्ची बात को धृतराष्ट्र महाराज से कहा हुआ धीरज व्यक्ति है विदुर। उनमें लेशमात्र भी स्वार्थ नहीं है। इसलिए विदुर के प्रति धृतराष्ट्र को अपार गौरव था। कौरव और पांडवों के प्रति एक ही प्रकार का प्रेम

था। मनसा-वाचा उनके हित की आकांक्षा किये हुए व्यक्ति हैं विदुर। धर्म और अधर्म के बीच के अंतर को सुंदर ढंग से स्पष्ट किया हुआ व्यक्ति है विदुर!

जन्म :

हस्तिनापुर का राजा था शंतनु। गांगेय उनका ही बेटा था। शंतनु दाशराज की पुत्री सत्यवती से प्रेम करता था। पिता की इच्छा को पूरा करने के लिए जीवन पर्यन्त तक ब्रह्मचारी के रूप में रहने के लिए और सत्यवती के बेटे को ही राज्याधिकार सौंपने की प्रतिज्ञा करके गांगेय ने भीष्म बन गया है। सत्यवती एवं शंतनु को चित्रांगद एवं विचित्रवीर्य नामक दो बेटे हुए थे। चित्रांगद के निधन के बाद विचित्रवीर्य राजा बन गया था। विचित्रवीर्य का निधन भी युवावस्था में ही था। उनको अंबिका और अंबालिका नामक दो पत्नियाँ थी। उन दोनों को बच्चे नहीं थे। सत्यवती ने महर्षि व्यास का स्मरण किया। बस महर्षि व्यास प्रत्यक्ष हुआ था। सत्यवती ने उनसे कुरूवंश को बचाने का अनुरोध करती है। उस अनुरोध को व्यास ने मान लिया।

उससे अंबिका के गर्भ से जन्मित होनेवाला बच्चा पराक्रमी तो होता लेकिन जन्म से वह अंधा होता था। व्यास ने कहा। फिर सत्यवती व्यास से अंबालिका को भी पुत्रभिक्षा देने का अनुरोध करती है। अम्मा! अंबालिका के कोक से भी महान वीर का जन्म होने पर भी वह पांडु शरीर वाला होता है। यों व्यास ने कहा- बेटा! किसी भी प्रकार के अवलक्षण के बिना और एक पुत्र को देने की कृपा करो। फिर सासू माँ की बात टाल न सकने के कारण उस बार अंबिका ने अपनी दासी को

खूब अलंकरण कर व्यास के पास भेजी थी। वापस जाते हुए व्यास ने कहा कि माताजी! इस बार अंबिका ने अपनी दासी को भेजी थी। शापग्रस्त यमधर्मराज को वह जन्म देगी। वह महान् विद्वान, धर्मपरायण, सर्वगुण संपन्न होता था। इतना ही नहीं कुरुवंश की भलाई के लिए वह भरसक प्रयत्न करता था।

ये तीन व्यक्ति ही हैं धृतराष्ट्र, पांडुराज और विदुर।

धृतराष्ट्र और पांडुराज सारी विद्याओं को सीखकर युद्ध कला में भी निपुण होते थे। विदुर सभी शास्त्रों को पढकर महान ज्ञानी बनता था। कौरव और पांडव विविध प्रकार की क्रीडाओं में लीन रहकर खुशी से जीवन बिताते थे। महान शक्तिशाली भीम के प्रति कौरवों को जलन था।सारी क्रीडाओं में पांडव ही अग्रगण्य रहते थे।

धर्मराज ने प्रजा के अनुराग को लूट लिया था। वैसे ही बडों का आदर प्राप्त किया। धृतराष्ट्र ने धर्मराज को राजा के रूप में नियुक्त किया।

पांडवों की कीर्ति चाँदिनी के जैसे फैल गई। दुर्योधन की ईर्ष्या भी बढ़ गई। दुर्योधन ने पिता को मनाकर पांडावों को वारणावतम् भेजने का इंतजाम करवाया।

पुत्र प्रेम के कारण धृतराष्ट्र पांडवों के प्रति किसी भी प्रकार का अहित करने के लिए हिचकता नहीं। ''पांडवों के प्रति बाहर से प्रेम दिखाता हूँ, मन की बात विदुर से नहीं कहूँगा ।'' यों दुर्योधन से धृतराष्ट्र कहता था। धृतराष्ट्र का मन एक के पक्ष में बात दूसरे के पक्ष में पांडवों ने वारणावत जाने की स्वीकृति दी।

लाख का घर :

यह सारी व्यूह रचना दुर्योधन का है। उन्होंने 'पुरोचन' नामक मंत्री को बुलवाकर पांडवों के लिए सारी सुविधाओं के साथ एक राजभवन का निर्माण करने का आदेश देता था। उनकी आज्ञा थी कि उस भवन का निर्माण घी में घुल-मिलाये गये लाख, गुग्गुल एवं मोम से होना है। ताकि आग की चिनगारी लगने मात्र से राख हो जाय। दुर्योधन की आज्ञा के अनुसार पुरोचन ने राजभवन का निर्माण पूरा कराया। पांडव बडों के आशीर्वाद प्राप्त कर वारणावत के लिए निकला।

विदुर की चेतावनी :

विदाई देने के लिए साथ में थोडी दूर तक आये हुए विदुर युधिष्ठिर से यों कहा कि 'हे पांडुपुत्र! शत्रुओं के कुतंत्र को समझकर सावधानी से व्यवहार करना। बिना लोहे के बनाये गये शस्त्र है। उस दुर्घटना से बचना चाहिए। सूखी हुई घास से युक्त जंगल, जल सक्ता है तब छेद में रही चूहे भी मौका देखकर बच निकलती है। पंचेंद्रियों को काबू में रखनेवाला ही शत्रुओं के प्रहार से अपने को बचा सकता है। विदुर की बातों के मर्म को धर्मराज के अलावा और कोई समझ नहीं सका। थोडी दूर चलने के बाद कुंती ने पूछी थी कि हे बेटा! शायद विदुर की बातों में कोई रहस्य छिपा हुआ होगा। वह रहस्य क्या है बेटा। ''धर्मराज ने कहा माँ! हमें जिस भवन में रहना है वह जल जायेगी, उस खतरे से बचने के लिए सुरंग को खुदवाने के लिए कहा। पंचेंद्रिय माने हम पाँच भाई मिलकर रहने से किसी भी प्रकार की विपत्ति का सामना आसानी से कर सकते हैं। यों विदुर ने हमें चेताया।''

पांडव वारणावत पहुँच गये थे। पुरजन उनका भव्य स्वागत किया। उनके लिए निर्मित 'शिवभवन' में पांडवों ने प्रवेश किया। पूरे भवन को परखने के बाद धर्मराज ने कहा ''हे भीम! इस भवन से घी की बू निकल रही है। यह मायागृह सा लग रहा है। इस भवन में हम लोग जागरूक होकर रहना है। वैसे ही पुरोचन के चाल-चलन पर दृष्टि केंद्रित करना है। इस भवन से गुप्त रूप से निकलने के लिए एक सुरंग मार्ग को खोदना है।''

विदुर ही कुछ दिनों के बाद सुरंग खोदने में कुशल खनक नामक आदमी को पांडवों के पास भेजता था। खनक ने अत्यंत गुप्त रूप से सुरंग मार्ग को खोदा। आधी रात में जब सभी सो रहे थे, तब भीम ने उस लाख-महल को आग सुलगाकर माँ और भाइयों सहित उस सुरंग मार्ग से निकलकर, शीघ्र गति से सबेरे होते ही वे गंगा के किनारे पहुँचे थे। विदुर से भेजे गये एक नाविक ने उन्हें गंगा पार कराता है। विदुर की सहायता का स्मरण कर वे अत्यंत आनंद का अनुभव करते हैं। सुबह देखने से शिवभवन राख हो गई। सभी पांडव जल गये हैं। यह खबर दुर्योधन को अत्यंत आनंदित किया। हस्तिनापुर की प्रजा अत्यंत दुःखी थे। भीष्म और द्रोण भी दुःखी हुए थे। विदुर ने रहस्यपूर्ण असली कथा को भीष्म से कहा। वे अत्यंत आनंदित हुए।

विदुर दुर्योधन के मंत्री होकर भी पांडवों की सहायता करने का मूल कारण उनकी धर्म बुद्धि ही है। असल में पांडवों को प्राण भिक्षा दिये हुए महान व्यक्ति है विदुर।

द्रौपदी स्वयंवर :

नदियाँ और जंगलों को पार करते हुए पांडव कुछ समय के बाद एकचक्रपुर पहुँच गये थे। ब्राह्मण वेष धारण कर एक विप्र के घर में समय काटने लगे थे। वहाँ के नगरवासियों को पीडित करनेवाला बकासुर का वध भीम ने किया। प्रजा ने पांडवों की खूब प्रशंसा की।

दुर्योधन के साथ सभी राजा हार जाते थे। ब्राह्मण वेषधारी अर्जुन मत्स्य यंत्र का भेद करता था। कुंती माता का आज्ञानुसार पाँच पांडव उससे विवाह करते थे। स्वयंवर की इस खबर को सुने हुए विदुर की खुशी की कोई सीमा नहीं रहती। कौरव ईर्ष्या से खूब जलने लगे थे। द्रुपद जैसे शक्तिशाली राजा पांडवों से रिश्ता कर उनके निकट होने से दुर्योधन की पीडा और अधिक हुई।

धृतराष्ट्र, भीष्म और द्रोण के सलाह के अनुसार पांडवों को द्रौपदी के साथ लिवा लाने के लिए विदुर को पांचाल राजधानी भेजते थे। हस्तिनापुर की प्रजा पांडवों को देखकर अत्यंत खुश होते थे।

कुछ दिन बीत गये :

एक दिन धृतराष्ट्र पांडु पुत्रों को बुलाकर कहते है कि बेटे! मेरे पुत्र दुष्ट हैं। मेरी बात को नहीं मानते। आप दोनों के बीच में बढनेवाली शत्रुता को शमित करने के लिए आपको आधा राज्य दे रहा हूँ। एक समय की हमारी राजधानी खांडवप्रस्थ को सुंदर ढंग से पुनः निर्माण कर सुख से शासन करो। पांडव लोग उस बंजर भूमि को महानगर के रूप में रूपायित कर इंद्रप्रस्थ नाम दिया। धर्मराज प्रजारंजक राजा के रूप में शासन करने लगे। राजसूययज्ञ करके राजाधिराजाओं के प्रशंसा की पात्र

बने। पांडवों का वैभव एवं मुख्य रूप से मयसभा में उसका पराभव और जिस ढंग से यह यज्ञ संपन्न हुआ था ये सारी घटनाएँ देखकर अहंवादी दुर्योधन के क्रोध को और भडकाया।

अनहोनी घटना घटी थी :

दुर्योधन ने पांडवों से प्रतिशोध लेने के लिए ही पिता को प्रेरित कर पांडवों को हस्तिनापुर भिजवाया। नये सभा मंदिर का उद्‌घाटन के समय प्रीति भोज एवं मनोरंजन के कार्यक्रम का संपन्न हुए थे। शकुनि ने धर्मराज को जुआ खेलने के लिए आमंत्रित किया। धर्मराज ने इसे पापकर्म एवं शत्रुता को जगानेवाली कहा। आखिर दुर्योधन की इच्छा से शकुनि ने जुआ खेलना आरंभ किया। विदुर ने धृतराष्ट्र से इस खेल को रोकने के लिए बार-बार अनुरोध किया। उसने विदुर की बातों की अनाकानी करते है। स्वयं दुर्योधन को हितबोध करते हैं। वह विदुर की बातों को ठुकराते हुए कहा कि तुम पांडव पक्षपाती हो, आपका सलाह हम नहीं चाहते। सभी पांडव हार गये। आखिर में द्रौपदी को भी हारा है। दुर्योधन असीम आनंद से विदुर के पास जाकर द्रौपदी को सभा में लिवा लाने के लिए कहते थे।

हे दुर्योधन! देखते-देखते तू अपने कंठ में फंदा लगा रहे हो। भयंकर विषैली साँप के मुँह में सिर रख रहे हो। तुम्हारा विनाश का समय आसन्न हुआ था। विदुर ने कुढते हुए कठोर वाणी में चेताया। भीष्म, द्रोण आदि ने सिर झुकाया। सभी के आँखों से आँसू झरने लगी।

दुर्योधन ने 'प्रातिगामिनी' को भेजकर द्रौपदी को सभा भवन में बुलवाया।

बडे भाई के आज्ञानुसार दुश्शासन ने खुली सभा में द्रौपदी की साडी उतारने लगा। श्री कृष्ण की कृपा से साडियों की ढेर जमने लगी। द्रौपदी कृष्ण से प्रार्थना कर ही रही थी। विदुर ने उठकर कठोर शब्दों में चेताया कि यह अत्यंत घोर कर्म है। यह पाप, वंश का नाश करेगा। लेकिन किसी ने भी इनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। चारों ओर स्तब्धता फैली हुई थी।

पांडवों का वनवास :

धृतराष्ट्र ने धर्मराज को बुलवाकर जो कुछ हुआ था उसे भूलने के लिए कहा था। यथारीति राज्य का शासन करने का सलाह देकर उन्हें इंद्रप्रस्थ भेज दिया। दुर्योधन के दबाव पर और एक बार जुआ खेल का आयोजन हुआ था। इस बार भी धर्मराज ने बुरी तरह हार गया। शर्त के अनुसार पांडवों ने बारह वर्ष वनवास और एक वर्ष अज्ञातवास करने के लिए चले गए। विदुर ने कुंतीदेवी को उनके पास रहने के लिए अनुरोध किया। कुंती ने मान लिया।

दुर्योधन आदि के दुर्व्यवहार के कारण धर्मराज ने विचलित मन से वहाँ से चला गया। भीम ने शत्रुनिर्मूलन करने की प्रतिज्ञा की। अर्जुन ने बाणों की वर्षा बरसाकर कौरवों का नाश करने के लिए कहा। नकुल और सहदेव अपने मुँह छिपाकर चले गये। द्रौपदी ने अपने दीर्घ केशों से मुँह ढककर शोकतप्त, बोझिल मन से चली गई। ''उनके निष्क्रमण से ऐसा बोध हो रहा है कि हमें कोई आपत्ति घेरनेवाली है। यों विदुर ने धृतराष्ट्र के पास जाकर कहा।'' धृतराष्ट्र ने संजय को बुलवाया। संजय ने कहा कि हे महराजन्! हमारे लोग स्वयं आपत्ति का आमंत्रण किया।

निश्चित रूप से द्रौपदी को खुले रूप से भरी सभा में अपमान करने के कारण उन्हें इसका बुरा फल भोगना पडेगा।

हे संजय! तू ने जो कुछ कहा वह सच ही है। विदुर ने दुर्योधन को समझाने का भरसक प्रयत्न किया। पुत्र वात्सल्य से मैं ने अनेक कुकर्म किया। यों कहकर दुर्योधन दुःखित हुआ।

विदुर का हित :



धृतराष्ट्र के आज्ञानुसार विदुर ने पुनः आया। हे विदुर, तुम धर्माधर्म के ज्ञाता हो। कौरव और पांडव को तुम समदृष्टि से देखते हो। मेरे बच्चों को किसी भी प्रकार की आपत्ति न घेरे ऐसा कोई मार्ग दिखाओ।

विदुर ने कहा - ''प्रभू! पांडवों को बुलाकर उनके राज्य को उन्हें वापस कर दो। उनके साथ स्नेहिल रहना ही न्याय है। पर धन की आशा करना अन्याय है। शकुनि की बातों को मानकर उन्हें अमल करना उचित नहीं है।''

धृतराष्ट्र क्रोधित होकर कहा - ''हे विदुर! सदा तू पांडवों के पक्ष में ही बोलते हो। तुम्हारे जैसे आदमी को हमारे पास रखना उचित नहीं है। तुझे देश बहिष्कार का दंड दे रहा हूँ। तू जहाँ चाहो वहाँ चले जाओ।

विदुर चला गया :

विदुर हसतिनापुर छोडकर काम्यकवन पहुँच गये जहाँ पर पांडव रहते थे। पांडवों ने उसे सादर स्वागत किया। धृतराष्ट्र के द्वारा बहिष्कृत हुआ था। इस विषय को पांडवों से कहा। प्यारे बेटे! आप सत्य और धर्म को मत छोडिये। सहनशीलता कई लोकों को जीत लेती है। यों हित बोध करके विदुर पांडवों के साथ समय काटने लगा ।

जब से विदुर देश को छोडकर चला गया तब से धृतराष्ट्र का मनःशांति भंग हुआ। संजय को बुलाकर जहाँ कहीं भी हो, विदुर को लिवा लाओ। संजय काम्यकवन पहुँच गया।

''हे मंत्री विदुर! जब से तुम हस्तिनापुर को छोड आये तब से धृतराष्ट्र काफी चिंतित हो रहा है। उसे भोजन रुचिकर नहीं लग रहा है। रात में सो नहीं पा रहा है। तुझे जाने के लिए कहा इसके लिए वह काफी चिंतित था। तुझे वापस लिवा लाने के लिए उन्होंने मुझे भेजा।''

विदुर संजय के साथ हस्तिनापुर को वापस लौट आया था। विदुर के आगमन से दुर्योधन का क्रोध और बढ गया।

संजय का दौत्य :

पांडवों ने बारह वर्ष का वनवास पूरा किया। विराट राजा की सेवा में एक वर्ष का अज्ञातवास भी पूरा किया। उत्तरा और अभिमन्यु का विवाह भव्य रूप से संपन्न हुआ था। कृष्ण ने पांडवों से कहा - आपने धर्मबद्ध व्यवहार किया। आपका राज्य आपको वापस मिलना ही है। लेकिन दुर्योधन इससे सहमत होगा या नहीं! देखना है। हम लोग दूत को

भेजकर उनके अभिमत का पता लगाएँगे। द्रुपद ने अपने पुरोहित को दूत के रूप में भेजा था। दूत ने धृतराष्ट्र से पांडवों का अभिमत स्पष्ट किया। धृतराष्ट्र ने कहा कि पांडवों के प्रति जो अन्याय हुआ था उसे ठीक करूँगा। उनकी ओर से पांडवों के पास संजय को दूत के रूप में भेजा था। पांडवों ने संजय को अत्यंत आदर किया।



धर्मराज ने संजय से कहा - ''हे संजय! हमारा राज्य हमें मिलना चाहिए। वरन् युद्ध ही एक मात्र विकल्प है।'' यों उनसे कहना ''यदि युद्ध ही अनिवार्य है तो, कौरव अर्जुन के बाणों की ज्वालाओं में तिनके के जैसे भस्म हो जाएँगे। गंभीर रूप से सोचिये।'' यों संजय ने धृतराष्ट्र से पांडवों के अभिमत को स्पष्ट कर वापस चला गया।

धृतराष्ट्र तत्काल विदुर को बुलवाकर कहा - ''हे विदुर! मेरा मन अशांति से कुढ़ रहा है। अमृत जैसे आपकी बातों से मेरे हृदय को शांति प्रदान करो।''

विदुर की नीति :

''महाराज! आपको नींद नहीं आ रही है यह बात सुनकर मुझे आश्चर्य हो रहा है। असल में शक्तिशाली व्यक्ति से विरोध-मोल लिए निर्बल व्यक्ति को, धन खोया हुआ व्यक्ति को, चोरी करने के लिए किधर जाना है यों सोचनेवाले व्यक्ति को कामासक्त इन चार लोगों को

नींद नहीं आती है। शायद ऐसे गुण आप में हैं नहीं। क्या आप औरों की संपत्ति का अपहरण करना चाह रहे है? नींद नहीं आने का मूल कारण बताइये।'' विदुर ने पूछा।

''हे विदुर! धर्मराज ने संजय को क्या कहा होगा? न मालूम होने के कारण मेरा मन विकल है। आपकी अच्छी बातों से मेरे मन को शांति प्रदान करो।'' धृतराष्ट्र ने कहा।

''हे महाराज! धर्मराज आपको रिश्तेदार, मित्र एवं सेवक के जैसे सेवा करनेवाला है न! मंत्री एवं गुरू के जैसे सोचनेवाले हैं। सत्यशील, शांतिमूर्ति एवं विनम्र व्यक्ति है। ऐसे व्यक्ति आपको अहित करना क्यों चाहते हैं? कम-से-कम अब उनका राज्य उन्हें वापस करना उचित था। रुद्राक्ष धारण किया हुआ बिल्ली जैसी कुछ न जाननेवाले के जैसे अभिनय करने से कोई लाभ नहीं है। हठ छोडकर पांडवों के प्रति न्याय करिए। आप धर्म मार्ग का ही अनुसरण करेंगे यों सोचकर आज तक धर्मराज ने मौन रहा है। आप इसे भली-भाँति जानते हैं।'' विदुर ने कहा।

''हे महाराज! ऐसा काम नहीं करना चाहिए जिस से प्रजा निंदा करें। अन्यों की संपत्ति को देखकर ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए। सभी के साथ मिल-जुलकर रहना चाहिए। क्रोध, प्रशंसा से फूलना, गर्व, असंतुष्टि, अहंकार, कोई काम न करना ये छः बुरे लोगों के लक्षण हैं।''

धन, विद्या एवं वंश दुष्ट लोगों के मन में गर्व पैदा करते है। अच्छे लोगों के लिए वे विनम्रता एवं सहनशीलता सिखाते हैं। कुशल धनुर्धारी के धनुष से छूटा हुआ बाण किसी को लगे बिना निष्फल नहीं होता है।

समर्थ व्यक्ति के नीति मार्ग, शत्रु राजा एवं उसके राज्य को सर्वनाश करता है।

सहनशील व्यक्तियों को देखकर लोग समझते हैं कि वे अशक्त हैं। सहनशीलता उत्तम व्यक्तियों के लिए अलंकरण है। परुष वाक्य न बोलने से और पाप कार्य न करने से मनुष्य भले व्यक्ति की कोटि में गिने जाते हैं। दूसरे लोग स्वयं को अहित करने पर भी, उन से बदला लेने की शक्ति होने पर भी, संयमित रूप से व्यवहार करने वाले, गरीबीपन में भी अपने पास जो कुछ था उसमें से दूसरे लोग माँगने पर देनेवालों को पुण्यपुरुष कहते हैं। न्याय की कमाई में से जरूरतमंद लोगों की सहायता करना सचमुच भला कार्य है।

स्त्री मोह, जुआ खेलना, शराब पीना, आखेट करना, कठोर बोलना, बुरी तरह दंड देना धन को फिजूल खर्च करना, सदाचारी व्यक्तियों के लिए मना है।

स्वयं को शोभा देने वाले वेषधारण, अपने आपकी प्रशंसा नहीं करना, दूसरे लोगों से पीडित होने पर भी उनकी हानि नहीं करना, दूसरों को दिये हुए दान के बारे में चिंता न करना, अनेक कष्टों का सामना करना पडें तो भी नीति मार्ग को नहीं छोडना उदात्त व्यक्तियों के लक्षण हैं।

अपने से समान लोगों से स्नेह, वार्तालाप, विवाद करना एवं अपमान को झेलना ठीक ही है, लेकिन अपने से बडे लोगों एवं हीन लोगों से स्नेह नहीं करना चाहिए। आपके पास जो कुछ था उसमें से थोडा-सा भाग दूसरों को देकर और बचा हुआ भाग को अनुभव करना

ही सही है। लक्ष्य-साधक को कई कष्टों का सामना करना पडता है। लोग उत्तम व्यक्ति की प्रशंसा करने पर भी खुशी से उमडते नहीं उलटे और कुछ उदात्त गुणों को अपना लेता हैं। उत्तम लोग दुर्गुणों को अपने पास नहीं आने देते।

हे महाराज! उल्लेख किए गए उक्त सभी गुण धर्मराज में है। आपने पांडवों को पाल-पोस कर बडा किया। अब उनके प्रति उदासीन रहना ठीक नहीं है। उनका राज्य उन्हें देकर आपके बेटों के बराबर देखना ठीक है। आप दोनों मिल-जुलकर रहने से देवताएँ भी आपको कुछ बिगाड नहीं सकते।'' यों विदुर ने कहा। धृतराष्ट्र ने सब कुछ ध्यान से सुना।

मैं क्या करूँ?

''हे विदुर! मुझे किस प्रकार का व्यवहार करना है? तुम भली भाँति जानते हो। मनःशांति के लिए मैं क्या कर सकता हूँ, आप स्पष्ट कीजिए।'' धृतराष्ट्र ने कहा।

''हे महाराज! अच्छी बातें कहने के लिए आप मुझ से बार-बार अनुरोध कर रहे हैं। लेकिन बीमार व्यक्ति को जिस प्रकार भोजन रुचिकर नहीं लगता, उसी प्रकार मेरी बातें आपको अच्छी नहीं लगेगी। फिर भी सुनिए।

हमारी भलाई चाहनेवाले सेवकों के प्रति क्रोध किये बिना व्यवहार करने से वे हमारी सेवा और अच्छी तरह करते हैं। समय को देखे बिना दूसरों के घर पहुँचना मना है। रात के समय में चौरेहे पर यों ही टहलना मना है। दुष्ट मंत्री की बात सुननेवाले राजा के विरुद्ध कुछ नहीं बोलना

चाहिए। भ्रमर जिस प्रकार फूलों से मकरंद का सेवन करती है वैसे ही दूसरों के मन को पीडा पहुँचाए बिना हमारे काम को पूरा करना चाहिए।

दूसरों की संपत्ति को, शैक्षिक योग्यताओं को, कीर्ति प्रतिष्ठा को और शक्ति को देखकर जो ईर्ष्यालू होते हैं, वे बीमार व्यक्तियों के जैसे दुःखी होते हैं। श्रोताओं के मन को पसंद आनेवाले प्रिय एवं हितकर बातों को बोलना चाहिए। वैसा बोलना नहीं जानते हैं तो मौन रहना अच्छा है। दूसरों से स्नेह एवं शत्रुता हमारी बातों पर ही निर्भर होता है। हमारा वार्तालाप दूसरों के लिए रुचिकर लगना है।

तेज धार वाला कुलहाडी से काटा पेड पुनः पल्लवित होता है। लेकिन बातों से बिगडा हुआ काम पुनः ठीक नहीं होता। शरीर में चुब गया बाण को बाहर निकाल सकते हैं लेकिन मन में चुबी हुई बातों को निकालना असाध्य है। धर्मराज के मुँह से आपके विरुद्ध कभी भी बुरी बात नहीं निकली। आपके बेटे पांडवों की निंदा करते देखकर भी रहे थे, आप भी मौन रहे। क्या आप जैसे व्यक्तियों के लिए यह उचित व्यवहार है? बुरा समय आसन्न होने पर बुरी बातें, बुरे काम अच्छा लगता है। पांडवों से शत्रुता को चाहनेवाली आपकी बुद्धि में कोई परिवर्तन नहीं आना सोचनीय बात है न? धर्मगुण संपन्न, धीर-वीरपांडवों के मन में आपके प्रति श्रद्धा भावना उनकी सहनशीलता ने उन्हें आज तक मौन रहने के लिए बाध्य किया।''

हे विदुर! तुम्हारी बातें बार-बार सुनने की जिज्ञासा है। और सुनाओ।'' धृतराष्ट्र ने कहा।

हे महाराज! पुण्य कार्य करना, धर्म मार्ग पर चलना दोनों उत्तम मार्ग है। वेदों के अनुसार इन दोनों में से धर्ममार्ग को उत्तम माना गया है। इस संसार में धर्ममार्ग पर चलने वाले लोग सुख के साथ यश को भी प्राप्त करते हैं। जब तक उनका यश इस संसार में फैली रहती है तब तक वे स्वर्ग सुख का अनुभव करते हैं।

अधिकाधिक पुण्य कार्य करने का आदत बनाना है। और एक बात है कि जिस सभा में महान व्यक्ति नहीं रहते वह सचमुच सभा कहलाने योग्य नहीं है। जो धर्म निर्णय नहीं कर सकते वे श्रेष्ठ व्यक्ति नहीं होते। जिस धर्म में सत्य नहीं है वह धर्म ही नहीं है। निष्कपट एवं निष्कलंक होकर जो नीतिमार्ग पर चलते हैं वे ही उत्तम व्यक्ति होते हैं। वीरता के बल पर जो संपत्ति को प्राप्त करने की चेष्टा करते हैं वे मध्यम होते हैं। सेवा करके जो जीता है वह अधम होते हैं। उत्तम व्यक्ति दुराचारी व्यक्तियों का समर्थन नहीं करते।

हे महाराज! जुआ खेलते समय मैं ने मना कर रोकने की चेष्टा किया। अप्रिय होने पर भी मैं ने सत्य को कहा। आपने सुना नहीं। कौओं का आदर कर मोरों को भगाने के जैसे, बिल्लियों का आदर कर सिंहों को परवाह न करने के जैसे आपने दुर्योधन आदि लोगों का आदर कर पांडवों को दूर किया। बडे लोगों का कहना है कि जाति की रक्षा करने के लिए एक को छोडना न्याय सम्मत ही है। अब भी आपकी बात को न सुननेवाले धुर्योधन को दूर रखना ही ठीक है।

स्त्री घर की लक्ष्मी है। सौभाग्यशालिनी भी है। वह घर की शोभा बढानेवाली होने के कारण सदा स्त्रियों की रक्षा करना चाहिए।

बिना फूल और फल वाले वृक्ष पर चिडियाँ नहीं बैठते। वैसे ही मृत व्यक्ति को पत्नी और बच्चे भी छोड देते हैं। हमारे द्वारा किये गये अच्छे कर्मों का फल ही हमारे साथ रहता है। इसीलिए हमें अच्छे कर्म ही करना चाहिए।

पुत्र प्रेम :

हे विदुर! तुम्हारे द्वारा कही गई सभी बातें सत्ययुक्त ही हैं। सहजनीति को बखूबी कहा। लेकिन मैं बेटा दुर्योधन को नहीं छोड सकता। शतप्रतिशत मेरा विश्वास है कि धर्म ही विजयी होगा।

हे विदुर! युद्ध में दुराचारी मेरे पुत्रों की मृत्यु निश्चित था। लेकिन इस दुःख को शमित करने का मार्ग दिखाओ।

हे महाराज! पांडवों से समझौता करना सब से उत्तम काम है। मेरी बातों के बारे में गंभीर रूप से सोचकर आपके बेटों को समझाकर धर्मराज से समझौता करने की चेष्टा कीजिए। धर्मराज को मत छोडिये।

''हे विदुर! तुम्हारी बातें मुझे काफी सांत्वना दी। तुम जैसा कहा वैसा करूँगा। इससे मुझे धर्म एवं यश मिलेगा।'' धृतराष्ट्र ने कहा। धृतराष्ट्र की इन बातों को सुनकर विदुर खुश हुआ, लेकिन धृतराष्ट्र की बातों पर उसे विश्वास नहीं मिला।

बहुत समय के बाद आपने अपने कर्तव्य को समझ लिया। दुर्योधन की बातें सुनकर फिर आप कर्तव्य को मत भूलिए। तब हम लोग काफी खुश होते हैं।'' यों कहकर विदुर चला गया।

दूसरे दिन सभा की बैठक हुई। धृतराष्ट्र ने भीष्म और द्रोण दुर्योधन से पांडवों से समझौता करने का सलाह देते हैं। असंभव कहकर दर्योधन ने इस बात को टाल दिया।

कृष्ण दौत्य :

आखिर पांडवों ने अपने दूत के रूप में श्रीकृष्ण को ही भेजने का निर्णय लिया। धृतराष्ट्र ने विदुर से कहा कि श्री कृष्ण हस्तिनापुर आ रहे हैं। विदुर की खुशी की कोई सीमा न रही।

हे विदुर! बडे पैमाने पर कृष्ण का आदर-सत्कार होना चाहिए। हस्तिनापुर को सुंदर ढंग से सजाना चाहिए। हमारे नगर में सुयोधन के भवन से भी भव्य एवं सुंदर मंदिर दुश्शासन का है उस मंदिर में कृष्ण का पडाव का इंतजाम करो। धृतराष्ट्र ने कहा।

हे महाराज! कृष्ण हमारे सत्कार स्वीकार करने के लिए नहीं आ रहे हैं। उस महान व्यक्ति के मन पसंद का काम करने से खुश हो जाते हैं। उस महामनीषी का आशय है कि कौरव और पांडवों के बीच में युद्ध न हो। हमारी भलाई उनके आनंद में ही है। भीष्माचार्य ने कहा कि कृष्ण के कहने के अनुसार करना ही ठीक है।

दुर्योधन का कहना है कि कृष्ण का सत्कार करने की कोई आवश्यकता नहीं। उसे बाँधने से पांडव लोग हमारे अधीन में आ जाएँगे। उन बातों को सुनकर सभी आश्चर्य चकित होते हैं। सभी अनुचित कहकर इसका खंडन करते हैं। दुर्योधन आगे कुछ नहीं कह पाया।

विदुर का भोज :

दूसरे दिन सुबह कृष्ण ने हस्तिनापुर पहुँचा। भीष्म, द्रोण एवं नगर प्रमुख राजधानी की सरहद के पास अत्यंत आदर से श्रीकृष्ण का स्वागत करते हैं। दुर्योधन तो नहीं गये। राजमार्ग के दोनों तरफ कतार में खडे हुए लोग जय घोष किया। कृष्ण राजभवन पहुँचते ही धृतराष्ट्र ने आगे जाकर स्वागत किया। सभी का हाल-चाल जानकर, धृतराष्ट्र से विदा लेकर कृष्ण ने विदुर के घर पहुँचा।

विदुर के घर पर भोजन किया। पांडवों के कुशल समाचार पूछकर विदुर आनंदित होता है। अपराह्ण में कृष्ण ने कुंती देवी से मिलते हैं। आये हुए भांजा को देखकर कुंतीदेवी की आँखों में आँसू आयी।

हे कृष्ण मेरे बच्चों के मुँख पर मुस्कुराहट कब आयेगी? मेरे प्राणपद द्रौपदी को खुली सभा में अपमान करते देखकर भी सभी मौन रहे। मात्र विदुर ने इसे अधर्म कहा। यों कहते हुए कुंती ने हिचकियाँ भरकर रो पडी। उसे सांत्वना देते हुए बुआ! दुःखित मत होना। शीघ्र ही पांडवों के कष्ट दूर हो जाएँगे। वे शत्रुओं का संहार कर पूरे राज्य को हस्तगत कर लेंगे।'' यों कहकर कुंती को नमस्कार कर कृष्ण 'विदुर' के घर लौट आये। उस रात को भी विदुर के घर पर भोजन करना है। इस प्रकार का व्यवहार से कृष्ण ने स्पष्ट किया कि 'भक्त सदा भगवान के लिए प्रिय होता है।''

हे माधव! मूर्ख दुर्योधन तुम्हारी बात को नहीं मानेंगे। वह अपने आप को ही महान मानता है। लेश मात्र भी बडों के प्रति गौरव नहीं था।

सभी कौरव मृत्यु की ओर जा रहे हैं। कल तुम सभा भवन में प्रवेश करते ही क्या होगा? यहीं सोच रहा हूँ। विदुर ने कहा।

हे विदुर! तुम्हारी बात सत्य ही है। दूत के रूप में आया, यदि मैं ऐसा नहीं करता तो समर्थ होकर भी कृष्ण उदासीन रहा कहकर समाज मेरी निंदा करेगी। मेरी बात सुनकर समझौता करने से वंशनाश एवं जन नाश नहीं होगा। देखेंगे कल क्या होगा? कृष्ण ने कहा।

कृष्ण संदेश :

दूसरे दिन आयोजित सभा में सभी उपस्थित हुए थे। विदुर के साथ कृष्ण ने सभा में प्रवेश किया। सभा में उपस्थित सारे लोग कृष्ण का संदेश सुनने के लिए उत्सुक थे।

हे महाराज धृतराष्ट्र! कौरव और पांडव प्रेम के साथ रहे। यही मेरी इच्छा है। पांडवों के राज्य उन्हें वापस दिलाने की जिम्मेदारी आपकी है। यों खडे होकर कृष्ण ने कहा।

हे कृष्ण! तुम्हारी बात सही है, लेकिन इस मामले में मैं कुछ नहीं कर सकता। यों धृतराष्ट्र ने कहा।

हे सुयोधन! न्याय कोविद भीष्म, विदुर, द्रोण आदि की बातें सुनकर समझौता करना ही अच्छा है और आपके लिए हितकर है। वीर लोग पांडवों के प्रति शत्रुता शाधते हुए दुष्ट लोगों के साथ स्नेह कर रहे हो। सभी की बातें मानकर समझौता कर लो। कृष्ण ने कहा।

तदनंतर विदुर ने कहा - ''हे बेटा! वृद्ध तुम्हारे माता-पिता की बातों को सुनो। यदि युद्ध होता तो बाद में उनकी देखभाल करनेवाले कोई नहीं बचता। वे अनाथ होंगे। उन्हें दूसरों की कृपा से जीना पडता है।''

तब धृतराष्ट्र ने विदुर को बुलाकर गाँधारी को लिवा लाने के लिए कहते हैं और गांधारी से दुर्योधन को हितबोध कराते है। उसे समझा-बुझाने का प्रयास अनेकों ने किया लेकिन दुर्योधन ने किसी का भी नहीं माना। उल्टे कृष्ण को बाँधने का प्रयास किया।

विश्वरूप :

हे दुर्योधन! आप लोग मुझे बाँधना चाहते थे। एक बार आँखें खोलकर देखिए। यों कहकर कृष्ण ने अपना विश्वरूप दिखाया। सभा मंदिर में बैठे हुए सभी लोग उस विराट रूप को देख न सकने के कारण आँखें मूँद ली। भीष्म, द्रोण, विदुर आदि लोग विश्वरूप का दर्शन कर तन्मय हुए थे। कृष्ण के अनुग्रह से विश्वरूप का दर्शन भाग्य मिले धृतराष्ट्र आनंदित हुए थे।

कृष्ण ने कुंतीदेवी के पास जाकर सभा में घटी प्रमुख विशेष का विवरण देता है।

भीष्म और विदुर आदि से विदा लेकर माधव वापस चले जाते हैं।

कुरुक्षेत्र युद्ध :

कुरुक्षेत्र युद्ध आरंभ होनेवाला था। युद्धक्षेत्र में पांडव और कौरव युद्ध के लिए सन्नद्ध हुए थे। पांडवों की सैनिक शक्ति सात अक्षौहिणी

थी और कौरवों की ग्यारह अक्षौहिणी। एक अक्षौहिणी माने 21870 रथ, 21870 हाथी, 65610 घोडे, 109350 पदातिबल है। अठारह दिन तक दोनों पक्षों के बीच में भयंकर युद्ध हुआ था। दोनों पक्षों को काफी नष्ट हुआ था। अनेक महान वीरयोद्धा चल बसे। युद्ध माने सर्वनाश के अलावा और कुछ नहीं। आखिर पांडव ही विजयी हुए थे।

विदुर की सांत्वना :

वृद्ध दंपति गांधारी और धृतराष्ट्र ने काफी दुःखित हुए थे। विदुर अनेक प्रकार से उन्हें सांत्वना देते हुए कहा - हे महाराज! मानव पुराना वस्त्र छोडकर नया वस्त्र पहनता है। एक घर छोडकर दूसरा घर पहुँचता है। वैसे ही जीव भी एक देह छोडकर दूसरे देह में प्रवेश करता है। दुःखित होने से कोई लाभ नहीं। पांडव भी हमारे ही बच्चे हैं। उन्हें देखकर शांति से रहिए। पांडव, द्रौपदी के साथ गांधारी और धृतराष्ट्र के पास जाकर उन्हें नमस्कार करते हैं।

तपोवन की ओर प्रस्थान :

धर्मनंदन के देखभाल में धतृराष्ट्र और गाँधारी अट्ठारह वर्ष तक सुख से जीवन बिताते हैं। एक दिन वे धर्मराज को बुलाकर कहते हैं - ‘‘हे वत्स! हम लोग जंगल जाकर तपस्या करने के लिए निश्चय किये।

कुंतीदेवी भी उनके साथ जाने के इच्छा प्रकट करती है। सभी पांडव उन्हें मना करने का भरसक प्रयत्न किया। लेकिन वे माने नहीं थे। विदुर भी उनके साथ वन की ओर प्रस्थान किये थे।

सभी ने उन्हें विदा किया।

शतयूपराजर्षि आश्रम के कुटीर में वे समय काटने लगे थे। एक दिन धर्मराज ने भाइयों के सामने धृतराष्ट्र, गांधारी, कुंती, विदुर एवं संजय आदि के पास जाने की इच्छा प्रकट की। सभी आश्रम गये थे।

कुंती ने सहदेव को हृदय से आलिंगन किया। लेकिन वहाँ विदुर दिखाई नहीं दिया।

विदुर का सन्न्यास :

धर्मराज, धृतराष्ट्र से पूछता है कि विदुर कहाँ है?

उन्होंने सन्न्यास ग्रहण कर कहीं जाकर तपस्या कर रहे थे। मात्र महर्षियों को दिखाई देता था। धृतराष्ट्र ने कहा -

धर्मराज विदुर को ढूँढने लगा। इतने में एक आश्रमवासी ने कहा - देखो .... देखो .... वे विदुर मुनी है। आश्रम के हलचलपूर्ण वातावरण को देखकर धर्मराज उनका पीछा करता था।

विदुर तेज चलकर घने जंगल में अदृश्य होते थे। धर्मराज उनका पीछा करते हुए हे महात्मा विदुर! आपके अत्यंत प्रिय धर्मराज आपके लिए आया था। कृपया रुक जाइए। यों जोर से कहा। थोडी दूर जाने के बाद एक पेड के नीचे दिगंबर रूप में खडे हुए विदुर को देखा वह निश्चल और मौन था।

आत्माओं का ऐक्य :

विदुर ने कुछ कहा नहीं। मात्र इशारा किया। अवधूत के रूप में था। देखते-देखते विदुर ने अपने योगशक्ति से अपना देह छोडकर आत्मा को

धर्मराज की आत्मा में विलीन किया। धर्मराज ने महसूस किया कि विदुर के देह से एक महान तेज शक्ति अपने में प्रवेश किया - धर्मराज ने विदुर के पार्थिव शरीर का दहनसंस्कार करना चाहा।

''इतने में वे यतीश्वर है। उनके देह को अग्निसंस्कार करना मना है।'' यों आकाशवाणी ने कहा।

धर्म, धर्म में विलीन हुआ था।

* * *